मुस्कराता हुआ फूल



राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

आमुख

परिषद् द्वारा आरंभ की गई ''पढ़ें और सीखें'' योजना का उद्देश्य बच्चों में पढ़ने की क्षमता और पुस्तक के प्रति प्रेम उत्पन्न करना है, जिससे वे अपने अंदर और बाहर की सुंदर और आश्चर्यजनक दुनिया को सूक्ष्म रूप से देखें। इस योजना को मुख्य रूप से इसलिए आरंभ किया गया है कि बच्चों में ऐसा उत्साह पैदा हो, जिससे उनकी जिज्ञासा को और बढ़ावा मिले, साथ ही उनका मस्तिष्क चीज़ों के बारे में और अधिक खोजबीन कर सके।

इस योजना के अंतर्गत हिन्दी और अंग्रेजी में भिन्न-भिन्न आयुवर्ग के लिए बहुत-सी पुस्तकें तैयार की गई हैं। इन पुस्तकों में कहानी, कविता और लघु उपन्यास से लेकर प्रचलित विज्ञान, खेलकूद और विभिन्न अभिरुचियों को विषय बनाया गया है।

हम उन प्रख्यात विद्वानों के आभारी हैं, जिन्होंने बच्चों की इन रुचिकर पुस्तकों को तैयार करने में अपना अमूल्य समय लगाया है। इन पुस्तकों के द्वारा हमारे देश के बच्चों को पुस्तकों की दुनिया की महायात्रा में शामिल होने की प्रेरणा मिलेगी। हमें आशा और विश्वास है कि यह पुस्तक और इस शृंखला की अन्य पुस्तकें न केवल बच्चों को सौंदर्यबोध, भावनात्मक एवं बुद्धिवादी स्तर तक आनंद देंगी अपितु स्तरीय पठन की क्षमता को भी बढ़ावा देंगी और उन्हें आजीवन शिक्षा के लिए प्रोत्साहित करेंगी।

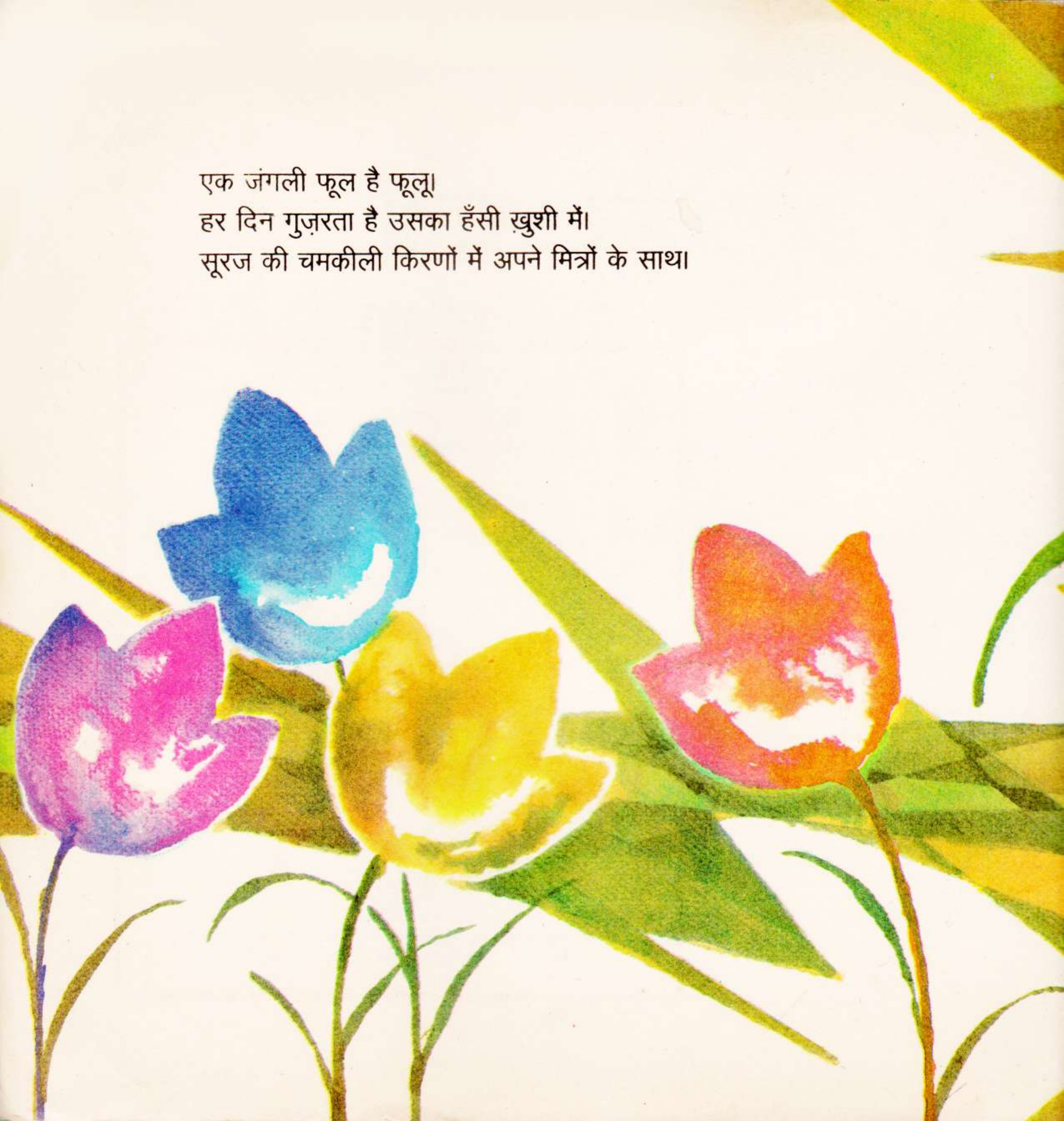
के. गोपालन
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

मुस्कराता हुआ फूल

जगदीश जोशी

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

एक जंगली फूल है फूलू।
हर दिन गुज़रता है उसका हँसी ख़ुशी में।
सूरज की चमकीली किरणों में अपने मित्रों के साथ।







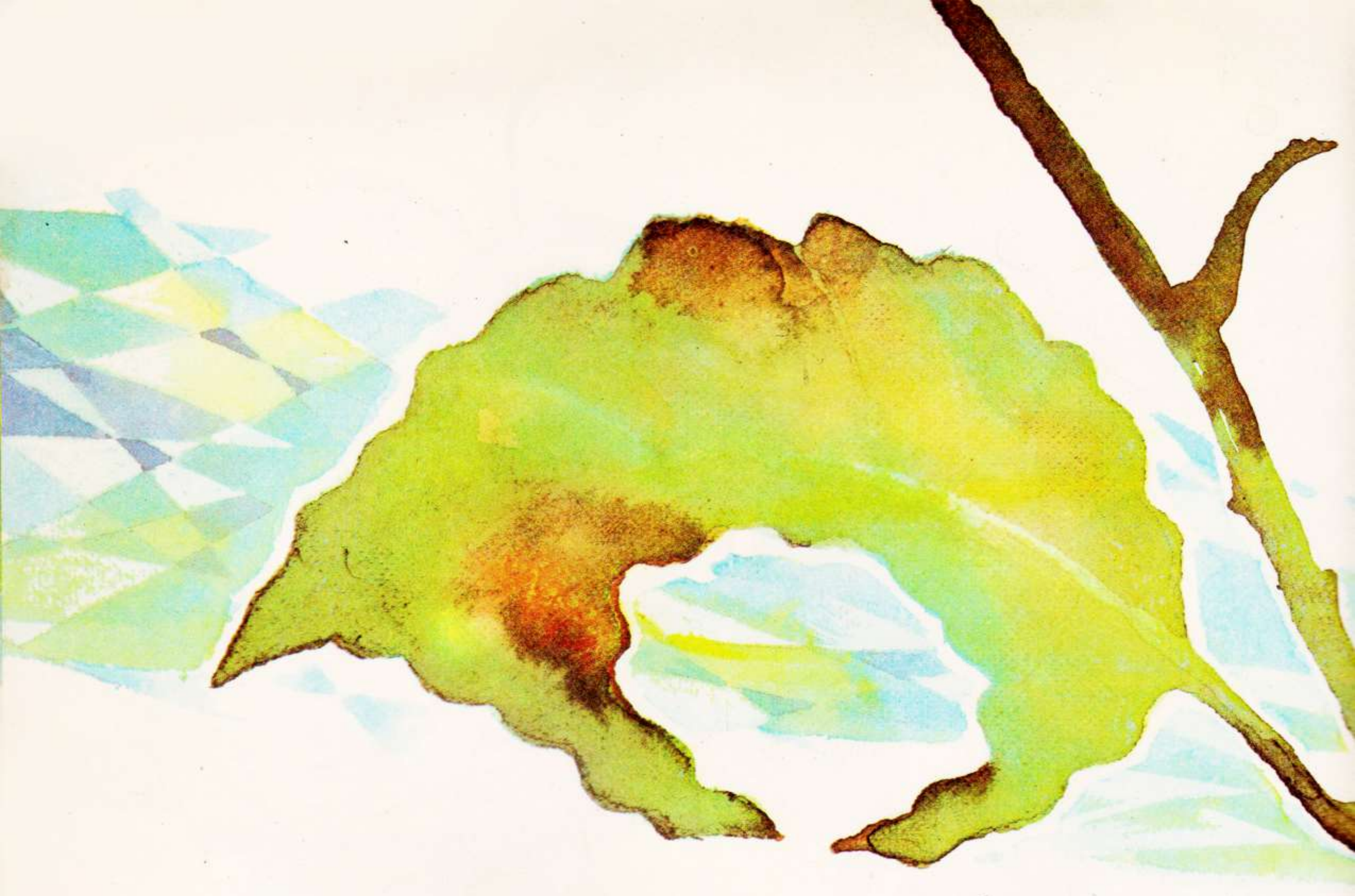
उसके चारों ओर ख़ूबसूरत तितलियाँ
पंख फड़फड़ाती हैं और खेलती हैं।





और मधुमक्खियाँ ख़ुशी के
स्वरों में सारे दिन गुनगुनाती हैं।





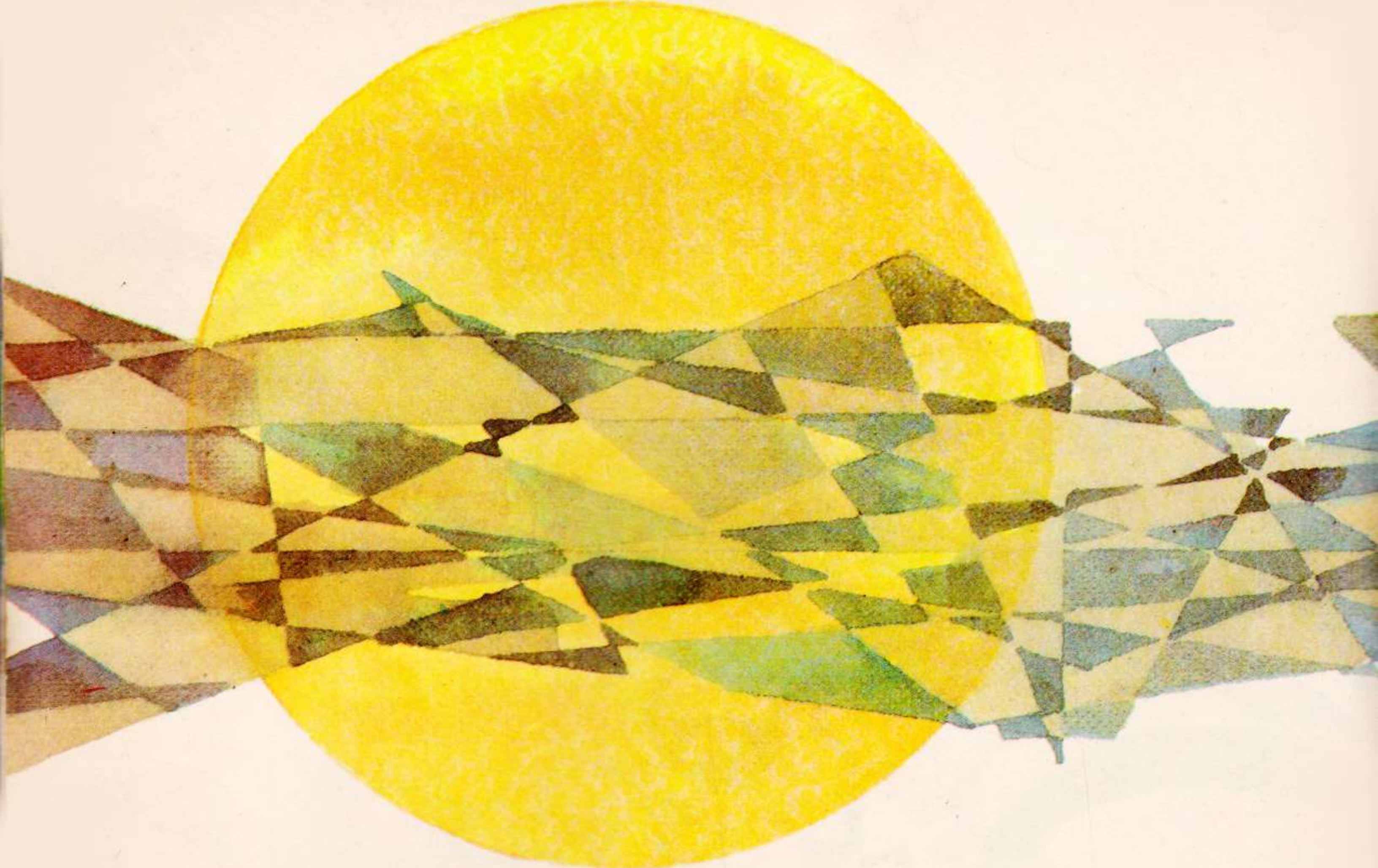
चमकीले झाँझा नाचते हैं,
बदन लचकाते हैं और घूमते हैं।







जब मधुमक्खियाँ उसके पास जाती हैं,
तो वह बहुत ख़ुश होता है कि
उसे गप्प लड़ाने के साथ ही
फूलू के मधुर अमृत तुल्य शहद को पीने का और पराग कणों को
एक फूल से दूसरे फूल तक फैलाने का मौका तो मिला।



मेंढक शाम को आता है
और बेसुरे गीत गाता है
और जब सूरज धीरे-धीरे डूब जाता है
तो चाँद आसमान पर आता है।





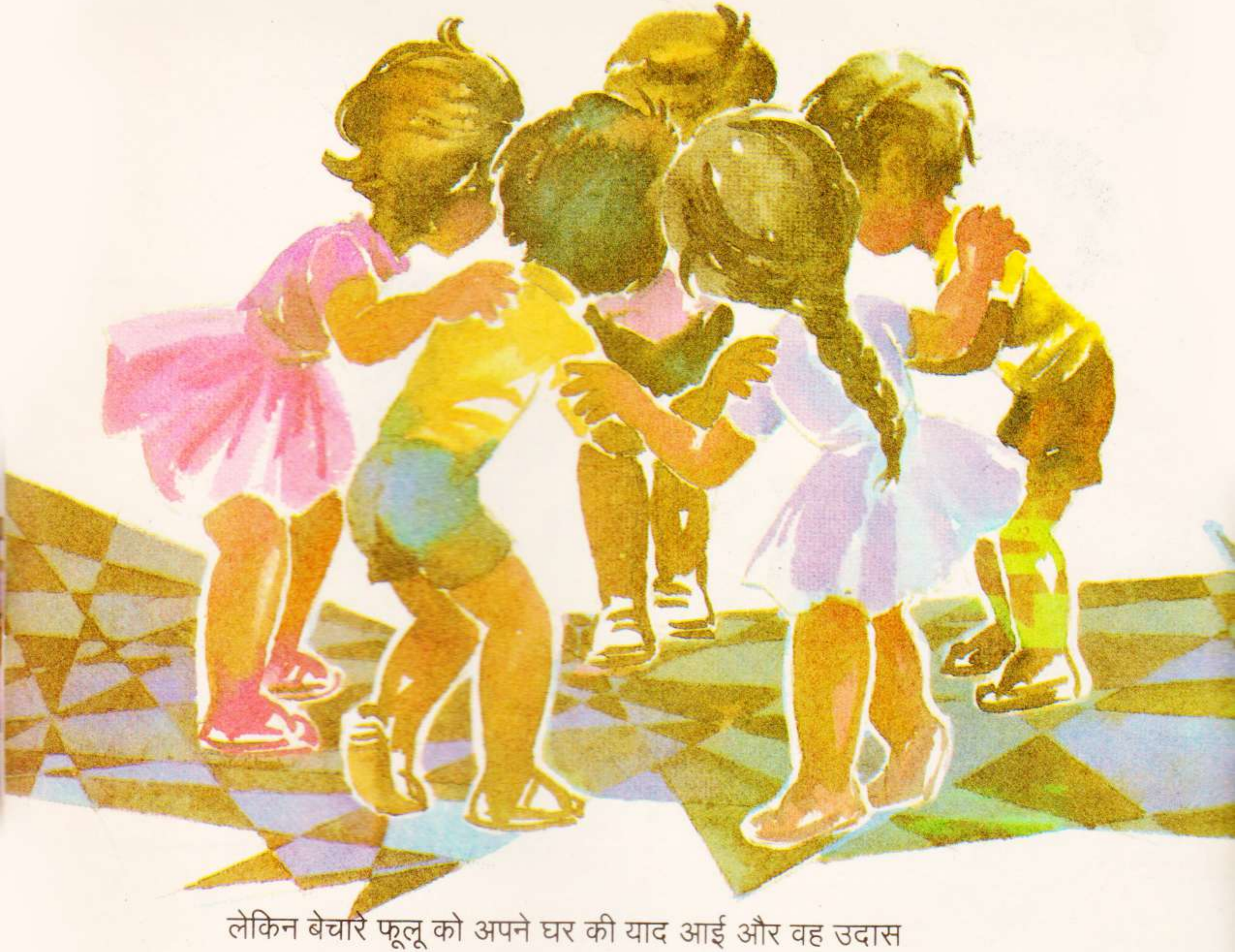
एक दिन कुछ बच्चों ने फूलू की प्यारी मुस्कान को देखा।
वे सभी उसके चारों ओर खड़े हो गए और
कुछ क्षण उसकी प्रशंसा करते रहे।
उन्होंने तालियाँ बजाईं, नाचे और ख़ुशी से चिल्लाने लगे
और इसी बीच एक बच्चे ने कहा "चलो इसे स्कूल के फूलों की
नुमाइश में ले चलें"।





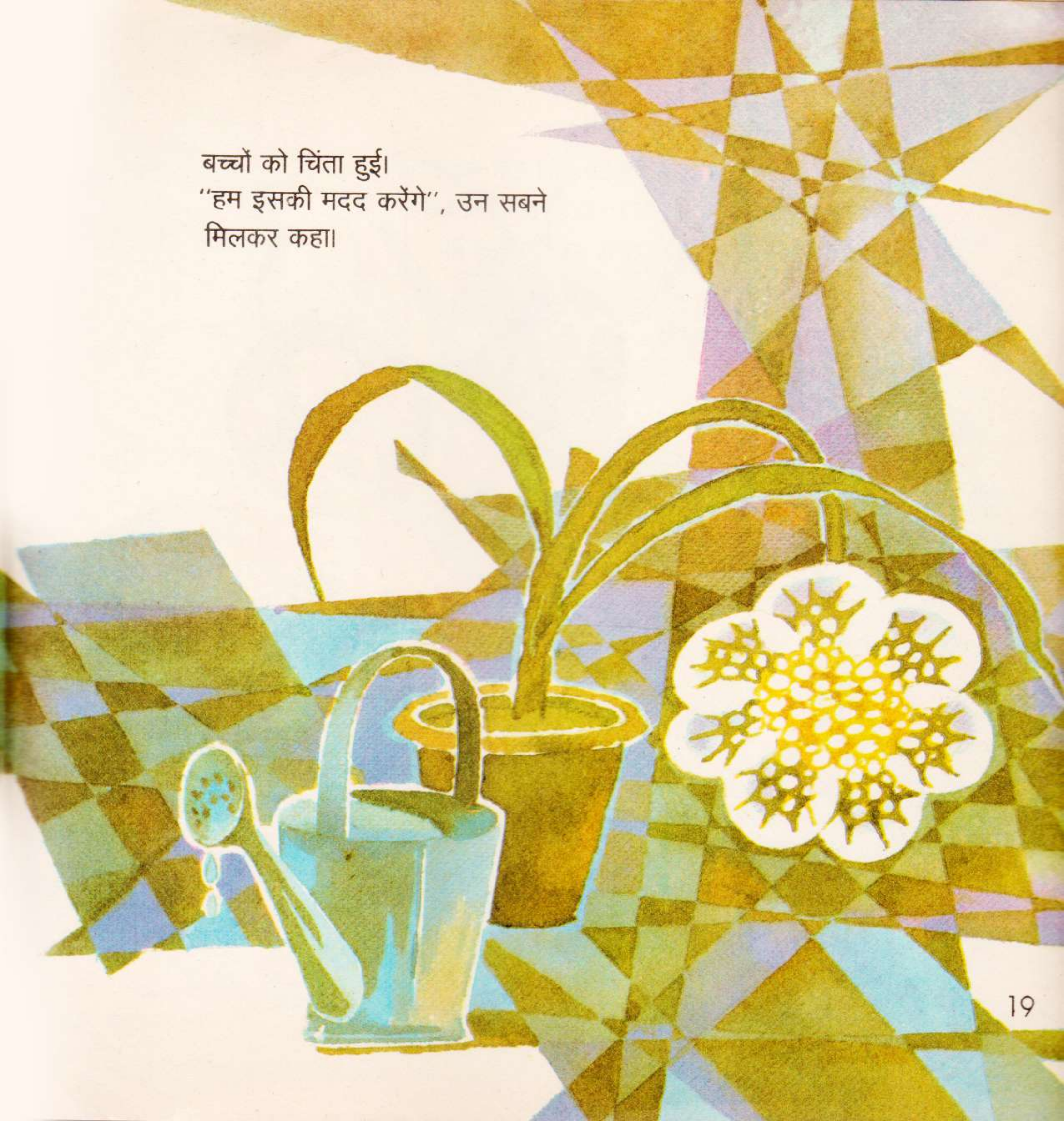


वे सब फूलू को बड़ी सावधानी से ले गए।
सभी बच्चे कितने ख़ुश थे !

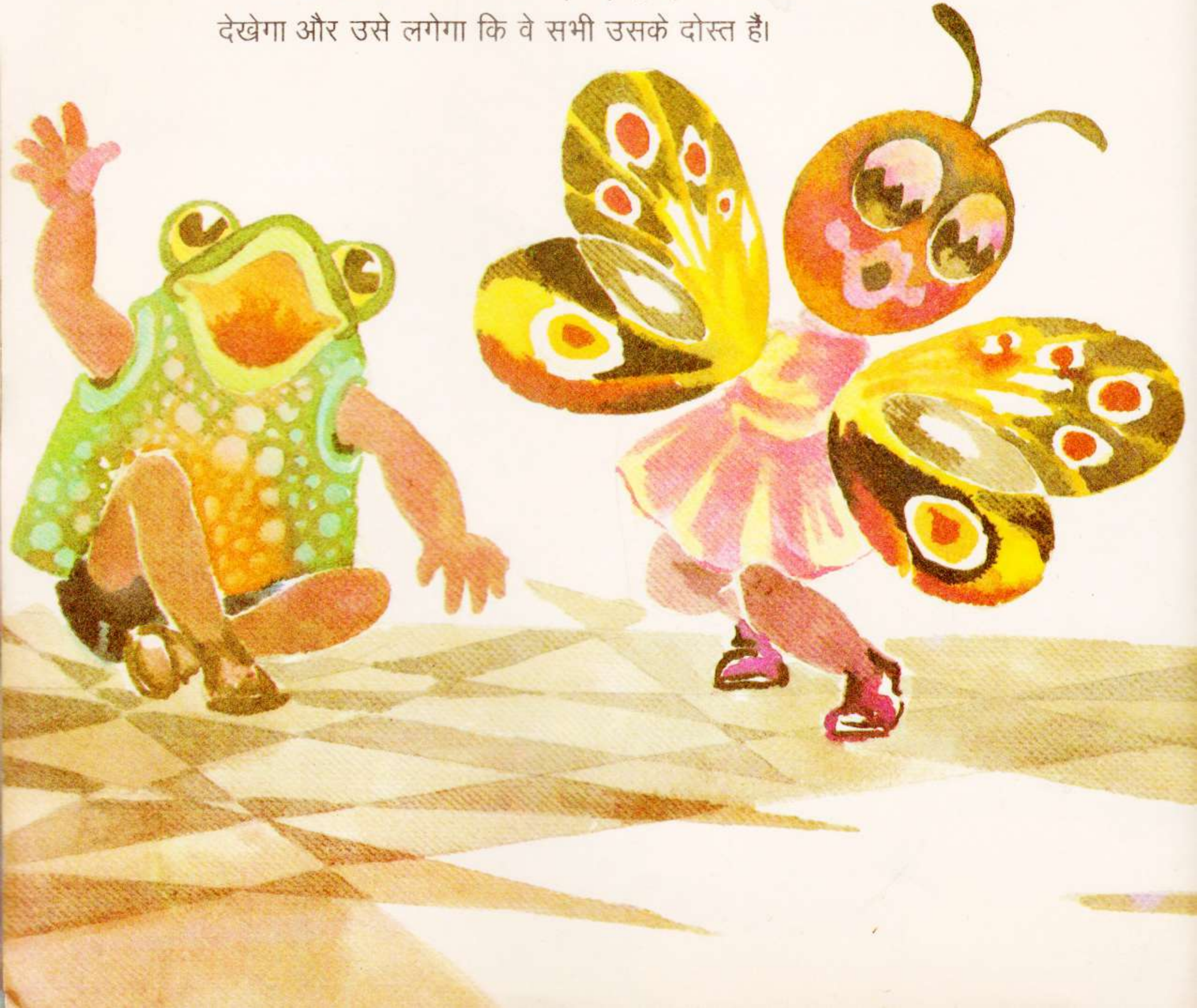


लेकिन बेचारे फूलू को अपने घर की याद आई और वह उदास हो गया। उसकी खिली हुई मुस्कान शीघ्र ही मुरझा गई। वह ठंडी साँसें भरने लगा।

बच्चों को चिंता हुई।
"हम इसकी मदद करेंगे", उन सबने मिलकर कहा।

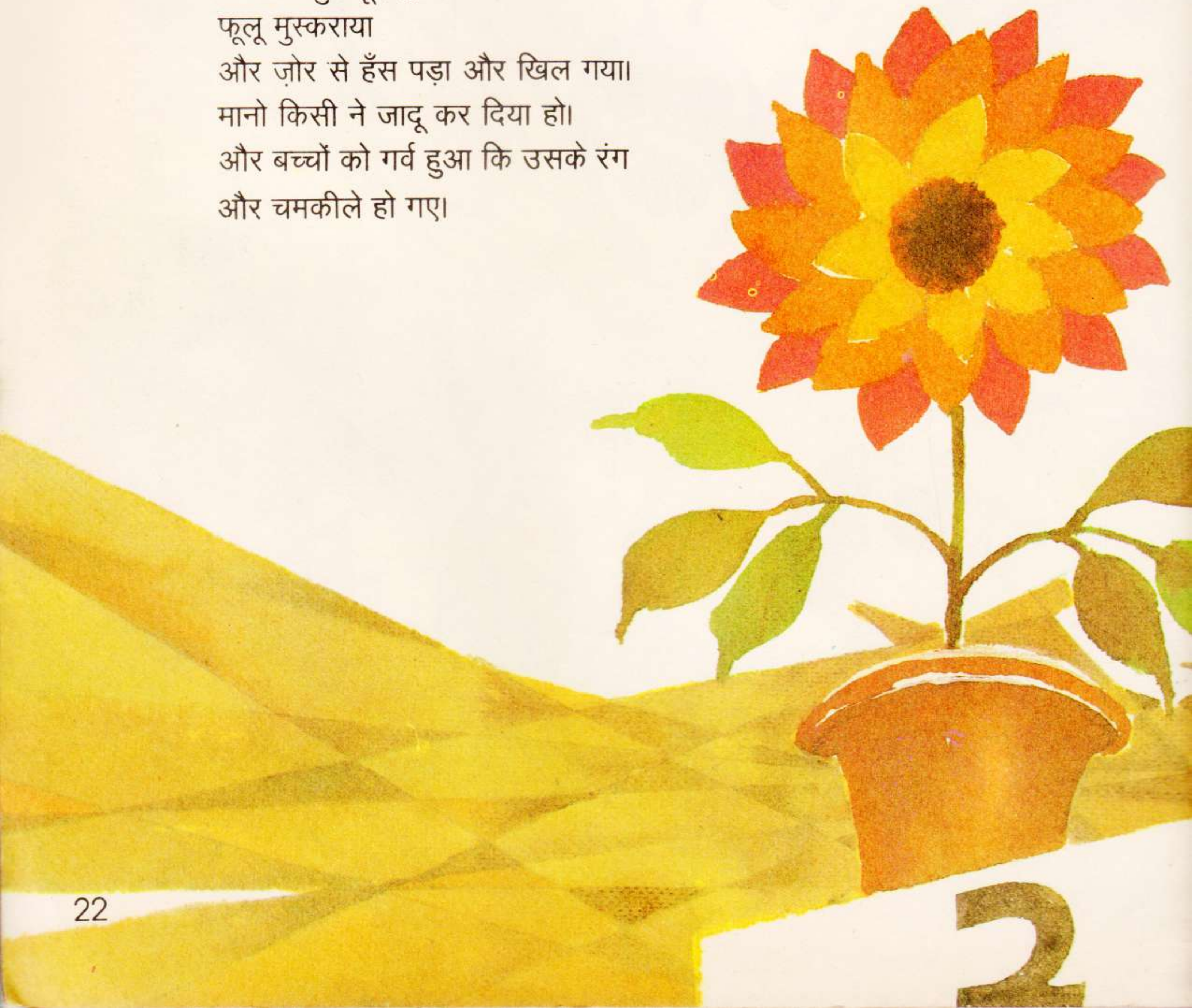


उनमें से एक झाँझा बना, एक तितली और एक मधुमक्खी। वे नाचे और उन्होंने अपने पंख फड़फड़ाए—इस आशा से कि वह देखेगा और उसे लगेगा कि वे सभी उसके दोस्त हैं।





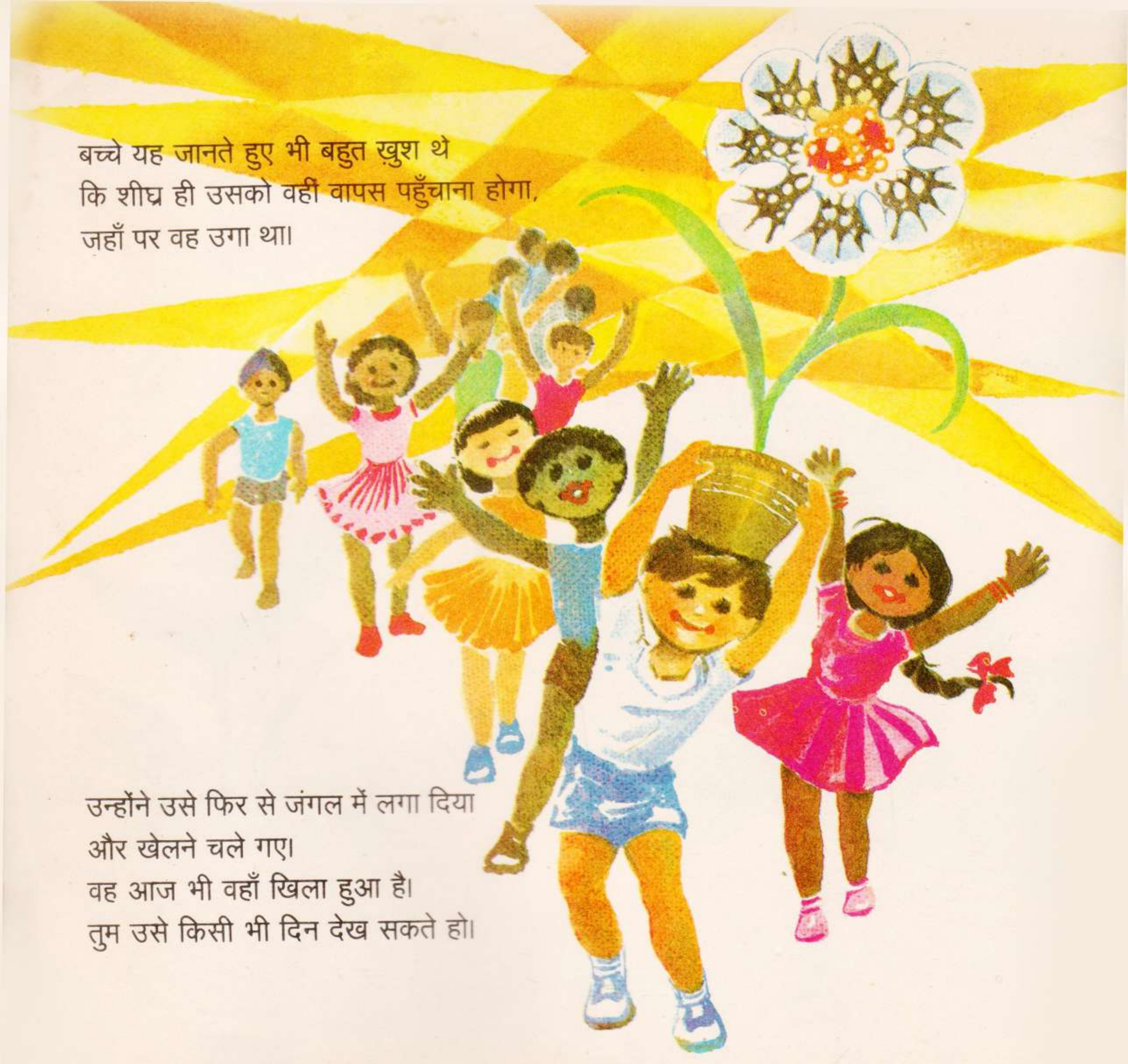
वह अकेला नहीं है, हालाँकि वह अपने
घर से बहुत दूर है।
फूलू मुस्कराया
और ज़ोर से हँस पड़ा और खिल गया।
मानो किसी ने जादू कर दिया हो।
और बच्चों को गर्व हुआ कि उसके रंग
और चमकीले हो गए।





यह कोई आश्चर्य की बात नहीं थी
कि फूलू को प्रथम पुरस्कार मिला था।

बच्चे यह जानते हुए भी बहुत ख़ुश थे
कि शीघ्र ही उसको वहीं वापस पहुँचाना होगा,
जहाँ पर वह उगा था।



उन्होंने उसे फिर से जंगल में लगा दिया
और खेलने चले गए।
वह आज भी वहाँ खिला हुआ है।
तुम उसे किसी भी दिन देख सकते हो।

अगस्त 1991
भाद्रपद 1913
P.D. 10T-SC

प्रकाशन सहयोग

सी.एन. राव **अध्यक्ष, प्रकाशन विभाग**

प्रभाकर द्विवेदी **मुख्य संपादक**
शशि चड्डा **संपादन सहायक**

यू. प्रभाकर राव **मुख्य उत्पादन अधिकारी**
चन्द्र प्रकाश टंडन **कला अधिकारी**
डी. साईं प्रसाद **उत्पादन अधिकारी**
प्रमोद रावत **उत्पादन सहायक**

मूल्य रु० 9.00

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशित तथा श्री ओम एन्टरप्राईज़ज़, ए-98/3, ओखला इन्डस्ट्रियल एरिया, फेस-II, नई दिल्ली 110020 द्वारा मुद्रित।